'आज की सीता' - एक अध्ययन

डॉ. मिनी ए. आर.
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग पय्यनूर कॉलेज

'आज की सीता' नाम ही इस बात की ओर संकेत करता है कि यह कविता रामायण की पारंपरिक सीता से अलग एक आधुनिक और सजग स्त्री की छवि प्रस्तुत करती है। आज के समय में जब स्त्री अधिकार, आत्मसम्मान, स्वतंत्रता और बराबरी की बातें समाज के हर कोने में उठ रही हैं, तब 'आज की सीता' जैसी कविता अत्यन्त प्रासंगिक हो जाती है। आज की सीता वह स्त्री है, जो केवल पति या परिवार के आदेशों पर नहीं, चलती, बल्कि स्वयं सोचती और निर्णय लेती हैं। वह वनवास या अग्निपरीक्षा जैसे अन्यायपूर्ण व्यवहार को सहन नहीं करती, बल्कि सवाल उठाती हैं। वह नौकरी करती है, अपने फैसले खुद लेते हैं, अपने अधिकारों केलिए लड़ती हैं। वह घर, समाज नौकरी, रिश्तों-हर क्षेत्र में अपनी पहचान और सम्मान की लड़ाई लड़ रही है। आज की सीता नारी अस्मिता, आत्मसम्मान और स्वतंत्रता का प्रतीक है। यह केवल पौराणिक चरित्र की पुनर्व्याख्या नहीं, बल्कि समकालीन भारतीय नारी के आत्मबोध की आवाज़ है।

भारतीय नारी संवेदनशीलता शक्ति, सहनशीलता, समर्पण और संघर्ष की प्रतीक मानी जाती हैं। वह भारतीय संस्कृति, सभ्यता और मूल्यों की आधार शिला रही है। वह केवल एक परिवार की धुरी नहीं बल्कि समाज और राष्ट्र की भी निर्माता है। उसकी भूमिका बहुआयामी है। कभी वह माँ के रूप में ममता की मूर्ती बन जाती है, तो कभी लक्ष्मी के रूप में समृद्धि का स्रोत बनती हैं। आज की भारतीय नारी पारंपरिक मूल्यों और आधुनिक विचारों के बीच संतुलन बनाकर चल रही हैं।

प्राचीन भारत में नारियों को उच्च सम्मान प्राप्त था, वे विद्वता, ज्ञान और धार्मिक कर्मों में भाग लेती थी। गार्गी, मैत्रेयी, सीता और अनसूया जैसी नारियाँ नारी शक्ति की प्रतीक मानी जाती थी। लेकिन मध्यकाल में समाज में अनेक कुरीतियाँ आ गई जैसे पर्दा प्रथा, बाल विवाह और सती प्रथा, जिनसे नारी की स्थिति कमज़ोर हो गयी। ब्रिटीश काल में जैसे-जैसे शिक्षा का प्रचार हुआ, भारतीय समाज में सुधार की लहर उठी। राजाराम मोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जैसे समाज सुधारकों ने स्त्रियों की दशा सुधारने में योगदान दिया। महिलाओं ने भी इस दौर में स्वतंत्रता में भारत लिया। रानी लक्ष्मीबाई, सरोजनी नायडू, कस्तूरबा गाँधी जैसी नारियों ने साहस, नेतृत्व और बलिदान का परिचय दिया।

स्वतंत्र भारत में भारतीय नारी ने नए युग में प्रवेश किया। शिक्षा और अधिकारों के विस्तार के साथ अब यह प्रत्येक क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्जा करा रही है। वह डॉक्टर, इंजनीयर, शिक्षक, वैज्ञानिक, अंतरीक्ष यात्री, सैनिक, खिलाड़ी, राजनीतिज्ञ और उद्यमी तक बनी है। कल्पना चावला, किरण बेदी, पी.टी.उषा, मिताली राज और निर्मला सीतारामन जैसी नारियाँ इसकी मिसाल हैं। फिर भी समाज में नारी के समक्ष कई चुनौतियाँ आज भी मौजूद है। जैसे दहेज प्रथा, घरेलू हिंसा, बाल विवाह, लिंग भेद, असमान वेतन और यौन शोषण। इन समस्याओं के बावजूद भारतीय नारी अपने आत्मविश्वास और संघर्षशीलता के बल पर आगे बढ़ रही है। वह अब अन्याय के विरूद्ध आवाज़ उठाने लगी हैं। और अपने अधिकारों केलिए सजग हो चुकी है।

भारतीय नारी अब अबला नहीं रही, वह सबला है। वह अपने अस्तित्व की रक्षा करते हुए समाज को भी नई दिशा दे रही है। वह आज न केवल अपने परिवार का बल्कि देश के प्रगति का भी महत्वपूर्ण आधार बन चुकी है। उसका संघर्ष, त्याग और समर्पण प्रेरणा का स्रोत है। भारतीय नारी परंपरा और आधुनिकता का सुंदर संगम है। वह प्रेम, करुणा, शक्ति, संघर्ष और बुद्धिमता की प्रतिमूर्ति है। यदि समाज उसे बराबरी का स्थान दे, तो वह न केवल अपने जीवन को बल्कि पूरे राष्ट्र को नई ऊँचाइयों तक पहुँचा सकती हैं।पौराणिक काल में सीता एक आदर्श नारी के रूप में प्रतिष्ठित है। रामायण के अनुसार, सीता राजा जनक की पुत्री थी और धरती से उत्पन्न हुई थी, इसलिए उन्हें भूमिपुत्री भी कहा जाता है। उनका विवाह भगवान राम से हुआ जो अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र थे। सीता का जीवन त्याग, सहनशीलता, नारी मर्यादा और आदर्शों का प्रतीक रहा। वनवास काल में उन्होंने पति धर्म निभाते हुए राम के साथ वनागमन किया। रावण द्वारा हरण किए जाने के बाद भी उन्होंने मर्यादा और संयम का पालन किया और लंका में रहते हुए अपने सतीत्व की रक्षा की। युद्ध के बाद जब राम ने उनकी पवित्रता पर प्रश्न उठाया, तब उन्होंने अग्निपरीक्षा दी। बाद में जब समाज ने पुनः उनकी शुद्धता पर प्रश्न उठाए तो उन्होंने राम की आज्ञा का पालन करते हुए गर्भावस्था में ही वनवास स्वीकार कर लिया। वाल्मीकि आश्रम में उन्होंने लव और कुश का जन्म दिया। सीता का संपूर्ण जीवन नारी धर्म, धैर्य, तपस्या और गरिमा का प्रतीक हैं। वे भारतीय स्त्रीत्व की उस परंपरा की प्रतीक हैं। जिसमें त्याग और सहनशीलता सर्वोच्च मूल्य माने जाते हैं।

आज की सीता परंपरागत सीता से भिन्न है। वह अब केवल त्याग, सहनशीलता और चुप्पी की मूर्ति नहीं, बल्कि जागरूक, आत्मनिर्भर और सवाल पूछनेवाली नारी है। उसने समाज द्वारा थोपी गई चुप्पी को तोड़ दिया है, और अपने अधिकारों केलिए खड़ी हो गयी हैं। आज की सीता पढ़ी-लिखी हैं। अपने निर्णय स्वयं लेती हैं और परिवार व समाज दोनों में अपनी स्वतंत्र पहचान बनाने का साहस रखती है। वह नौकरी करती है, अपनी बात खुलकर कहती हैं और अगर अन्याय होता है तो विरोध करती है। वह अब अग्नि परीक्षा नहीं देती, बल्कि प्रश्न करती है, क्यों केवल स्त्री को ही परीक्षा देनी पड़ती है ?1 वह अब राम की आज्ञा से व्रन नहीं जाती, बल्कि अपना रास्ता खुद चुनती हैं। वह अब बेटे की माँ होकर भी बेटी को बराबरी का हक देना जानती हैं। आज की सीता वह स्त्री है, जो परंपराओं को सम्मान देते हुए भी अपनी अस्मिता और स्वाभिमान से कोई समझौता नहीं करती। वह अब अबला नहीं, सबला है। संवेदनशील भी, संघर्षशील भी। आज की सीता संघर्ष की नहीं, समाधान की प्रतीक बन चुकी हैं।

शिखाकुमारी उपाध्याय की एक प्रमुख कविता है- 'आज की सीता' जो नारी अस्मिता, आत्मसम्मान और सामाजिक अन्याय के विरोध में एक साहसी स्वर प्रदान करती है। यह कविता प्राचीन काल की सीता की तुलना आज की स्त्री से करती है और यह दिखाती है कि कैसे आधुनिक स्त्री अब मौन नहीं है, वह अन्याय के विरुद्ध अपनी आवाज़ बुलंद करती है। यह रचना स्त्री सशक्तीकरण की एक प्रेरणादायी व्यवस्था है। यहाँ कवयित्री एक नारी की साहसी स्वर उभरकर सामने आता है। वह राम से कहती है कि अबल वह वही सीता नहीं रही, जो मर्यादा के नाम पर चुपचाप अन्याय सह लें। आज की स्त्री अब हर अन्याय के खिलाफ सवाल बनकर खड़ी होती है और जवाब भी खुद

लेती हैं। यहाँ कवयित्री यह बताती है कि अब की स्त्री, आँसुओं में बह जानेवाली जानकी नहीं है। वह बार-बार अग्निपरीक्षा नहीं देगी और न ही अपने चरित्र के प्रमाण प्रस्तुत करेगी। यह स्पष्ट संकेत है कि आज की नारी अपने अस्तित्व और चरित्र को लेकर अपराधबोध से मुक्त है, और अपने आत्म सम्मान को सर्वोपरी मानती हैं। जो सीता ने अतीत में चुप्पी से सब सही, समाज ने रावण की बुराई की जगह सीता की शुद्धता पर प्रश्न उठाया। कवयित्री कहती है कि दोष रावण की दृष्टियों में था, फिर भी सीता को कठघरे में खड़ा किया गया। यह आज की सच्चाई है, जब कोई अपराध होता है तो दोषी की बजाय पीड़िता से सवाल किए जाते हैं। यह मानसिकता नारी को बार-बार अपमानित करती है। यहाँ कवयित्री राम से सवाल करती है कि जब सीता पर अन्याय हुआ, तब राम मौन क्यों रहे? यह मौन पुरुष प्रधान समाज का प्रतीक है, जो नारी पर होते अन्याय को देखता तो है, पर आवाज़ नहीं उठाता। राम जैसे आदर्श पुरुष भी स्त्री को उसका अधिकार दिलाने में असमर्थ रहे, यही कारण है कि समय के साथ स्त्रियों ने अपने अधिकार खुद हासिल करने का बीड़ा उठाया है।

समय के प्रवाह ने नारी को नया रूप दिया है। अब वह सिर्फ सहनशील की मूर्ति नहीं, बल्कि शक्ति और प्रतिकार का रूप भी हैं। कल की सीता अब दुर्गा बन चुकी है जो अत्याचार को सहन नहीं करती, बल्कि उसका अंत करती है। यह परिवर्तन समाज में स्त्रियों के बदलते स्वरूप को दर्शाता है, जहाँ वे अब न्याय, शिक्षा, सुरक्षा और आत्मनिर्भरता की माँग करती है और इसे प्राप्त भी करती हैं।

"ऐ राम मुझे पूजकर भी मेरी/बोली लगा दी
गर्भ में मरने से दहेज जाती है,/तक की पीड़ा मुझे दी जाती है"

यहाँ कवयित्री ने एक कटु और यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। एक समय स्त्री का सीता, दुर्गा, लक्ष्मी आदि के रूप में पूजनीय मानते थे, उस समाज ने वास्तविक जीवनस में उसी स्त्री को गर्भ में मारा जाता है, दहेज की आग में झोंका जाता है। यह दोहरे सामाजिक मापदंडों पर तीखा व्यंग्य हैं। एक ओर स्त्री को आदर्श माना गया और दूसरी ओर उसी पर अत्याचार किया गया। आज की सीता चुप नहीं रहेगी। वह अब समर्पण नहीं, संघर्ष का मार्ग अपनाएगी। अपने सम्मान और अधिकार को याचना से नहीं, बल्कि दृढ़ता से प्राप्त करेगी। यह आधुनिक नारी की दृढ़प्रतिज्ञा चेतना है- जो अब संवेदनशील होकर भी निर्बल नहीं, बल्कि न्याय केलिए लड़नेवाली है। नारी कभी घर की लक्ष्मी, वंश की जननी मानी जाती थी, पर अब वही नारी जब सवाल पूछती है, विरोध करती है, तब समाज उसे अभिशाप की तरह देखता है। सीता बार-बार कहती रहती है कि वह केवल अतीत की पीड़ा नहीं, बल्कि सदियों से चले आ रहे हुए अत्याचार का हिसाब करने आई है। आज की सीता नारी मुक्ति की प्रतीक है, जो सामाजिक मर्यादाओं की बेडियों को तोड़ चुकी हैं। उनका विरोध तो सामाजिक व्यवस्था पर हैं, जहाँ नारी से हठ बार अपनी शुद्धता का प्रमाण माँगा जाता है, जबकि पुरुष मौन और मुक्त रहता है। यह आज की सच्चाई हैं- जब कोई अपराध होता है तो पीडिता से सवाल पूछता है। राम जैसे आदर्श पुरुष भी स्त्री को उसका अधिकार दिलाने में असमर्थ रहे, यह परिवर्तन समाज में स्त्रियों के बदलते स्वरूप को दर्शाता है, जहाँ वे अब न्याय, शिक्षा, सुरक्षा और आत्मनिर्भरता की माँग करती है और इसे प्राप्त भी करती है।

सीता यहाँ पौराणिक नारी का प्रतूक है, राम उस पुरुष समाज का जो न्यायप्रिय होते हुए भी स्त्री की रक्षा में असफल रहता हैं। अग्निपरीक्षा और चरित्र प्रमाण आज भी स्त्रियों की सामाजिक परीक्षा की मानसिकता को इंगित करते हैं। कविता यह बताती है कि सीता अब जंगल नहीं जाएगी, अब वह समाज से लड़कर अपने सम्मान को बचाएगी। शिखा कुमारी उपाध्याय की यह रचना आज के समाज को यह आइना दिखाने में पूर्णतः सफल होती है कि स्त्री अब चुप नहीं, वह दुर्गा बनकर अपने अस्तित्व की रक्षा करेगी।

कृषि उपार्जन एवं नवाचारी जनसंचार साधनों का पिछड़ा वर्ग की महिलाओं में सशक्तीकरण (रीवा जिले के विशेष संदर्भ में)

डॉ. महानन्द द्विवेदी
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (समाजशास्त्र)
शास. शहीद केदारनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मऊगंज (म.प्र.)
श्रद्धा शुक्ला
शोधार्थी समाजशास्त्र,
शास. ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

शोध सारांश:-
नये युग की मांग है कि समाज और परिवार का सर्वांगीण संतुलित विकास किसी भी परिवार या समाज का संतुलन तभी सम्भव है जब समाज या परिवार की रचना करने वाले दो महत्वपूर्ण मानव इकाई जो महिला एवं पुरुष के रूप में रेखांकित होते हैं के विकास के मार्ग सम्यक हों। महिला और पुरुषों का विकास एकपक्षीय होने पर विकास लक्ष्य की पूर्ति संभव नहीं हो पाती। विगत सदियों पर गौर करें तो महिलाएं मूलतः घर की चाहरदीवारी में कैद हो गई थीं। विकास के सभी आयाम पुरुषों के पास संरक्षित हो गये थे। महिलाओं को भोजन, वस्त्र तक पुरुषों द्वारा देय होने लगा। जिस कारण महिलाओं के आत्मशक्ति धीरे-धीरे क्षीण होती गई और वे सीमित दायरे में रहना ही अपना नियति मान बैठी। इस शोध पत्र में उक्त बिन्दुओं का अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द:-कृषि, उपार्जन, नवाचारी, जनसंचार, साधनों, पिछड़ा वर्ग, महिलाओं, सशक्तीकरण आदि।

प्रस्तावना:- आजादी मिलने के साथ ही महिलाओं के जीवन चक्र में बदलाव आना शुरू हुआ। उन्हें शिक्षा के अवसर मिले और देश की तात्कालिक परिस्थितियों के अनुकूल अपने मत-अभिमत देने के अधिकार भी मिले। लोकतांत्रिक व्यवस्था में मतदान एक ऐसा पहलू सामने आया जिसके माध्यम से महिलाओं को पहलीबार अपने विचारधारा को सामने रखने का अवसर मिला। कुछ समय बाद जैसे-जैसे समय आगे बढ़ता गया अन्य क्षेत्रों में भी महिलाओं को विचार प्रकट करने अपने शक्ति सामर्थ्य अनुकूल कार्य करने के अवसर मिलने लगे। इस तथ्य को रेखांकित करते हुए महिलाओं के सक्षमता के लिए नये-नये मानक बने जिन्हें महिला सशक्तिकरण के मानदण्ड के रूप में रेखांकित किया जाने लगा।

महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए जो मानक निर्धारित किये गये उनमें से इस बात का चिन्तन किया गया कि सशक्तीकरण का मुख्य आधार आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं की किसी न किसी रूप में भूमिका होनी चाहिए। महिलाओं की आर्थिक सक्षमता ही उन्हें समाज में बराबरी का दर्जा दिलाने का समर्थ्य और सार्थक माध्यम बन सकती है। इस स्थिति में भी समाज और परिवार में महिलाओं की भूमिका प्रभावी बनेगी। वर्तमान में देखा जाये तो विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार और अर्थमूलक कार्य मिलने के अलग-अलग मानक हैं। प्रस्तुत अध्ययन के राजस्व क्षेत्र में मूलतः कृषि परिक्षेत्र प्रचुरता में है। इस क्षेत्र से लगभग 70 प्रतिशत पिछड़ा वर्ग महिलाएं संलग्न हैं। इस संलग्नता में उनमें नवक्रांति के अवसर उपलब्ध कराये हैं। कृषि को पारम्परिक पद्धति से हटकर नये परिप्रेक्ष्य में लाने के लिए इस क्षेत्र में भी नवाचारी कृषि का सूत्रपात होने लगा है। जिसमें महिलाओं की भूमिका भी प्रभावित दिख रही है। जो उनके सशक्तीकरण का परिचायक बनने का मार्ग प्रशस्त कर